शासकीय महाविद्यालय, नागदा, उज्जैन

सम्बद्ध

विक्रम विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश (भारत)

शैक्षिक भ्रमण (प्रतिवेदन)

(12 December 2022)

स्थल का नाम: उज्जैन के वेधशाला एवं तारामंडल

M.Sc.(Maths), B.Sc.(3rd& 2nd Year, Maths Group), B.A. 3rd Year.

Total Students: 40

अध्यक्ष: प्रोफ. डॉ. पी बी रेड्डी, प्राचार्य,शासकीय महाविद्यालय नागदा

मार्गदर्शक : डॉ. के. सी .मिश्रा, डॉ ऊषा वर्मा एवं डॉ सोनाक्षी सोलंकी

प्रस्तावना

शासकीय महाविद्यालय नागदा के एम.एससी. फर्स्ट, थर्ड सेमेस्टर, बी.एससी. थर्ड एवं सेकंड इयर्स तथा बीए थर्ड ईयर के विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण पर रिपोर्ट इस प्रकार है.

12 दिसंबर 2022 को शासकीय महाविद्यालय नागदा के एम.एससी. फर्स्ट, थर्ड सेमेस्टर, बी.एससी. थर्ड एवं सेकंड इयर्स तथा बीए थर्ड ईयर के विद्यार्थियों का शैक्षिक भ्रमण उज्जैन में संपन्न हुआ यह शैक्षिक भ्रमण मध्यप्रदेश शासन द्वारा वित्त पोषित MPHEQIP द्वारा प्रायोजित महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ पी वी रेड्डी के निर्देशानुसार भौतिक विज्ञान के प्राध्यापक डॉ केसी मिश्रा हिंदी विभाग की प्राध्यापक (अतिथि विद्वान) डॉ उषा वर्मा एवं इंग्लिश के प्राध्यापक(अतिथि विद्वान) डॉ सोनाक्षी सोलंकी के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया भ्रमण के दौरान 40 छात्र-छात्राएं एवं तीन मार्गदर्शक प्राध्यापक एक वाहन चालक, परिचालक मौजूद थे यात्रा का प्रारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ पी. भास्कर रेड्डी ने गाडी को छात्र-छात्राओं एवं मार्गदशकों के साथ हरी झंडी दिखाकर किया.

(विद्यार्थियों को दिशा निर्देश देते हुए प्राचार्य डॉ पी बी रेड्डी)

ऊपर बतायी गयी तिथि को उपरोक्त विद्यार्थी प्राचार्य के देश निर्देश प्राप्त करने हेतु पहले से ही नगर पालिका परिषद् के पास उपस्थित थे| प्रातः 9:00 बजे प्राचार्य डॉ पी बी रेड्डी ने विद्यार्थियों के दल एवं उनके साथ उनके संरक्षण हेतु जाने वाले प्राध्यपकों एवं बस चालाक -परिचालक को दिशा निर्देश देकर बस के आगे नारियल तोड़कर एवं हरी झंडी दिखाकर रवाना किया और यह सब शहर के जाने माने पत्रकार महोदय परवेज़ द्वारा मीडिआ कवरेज में संधारित करलिया गया। बस अंदर विद्यार्थियों के बैठने की समुचित व्यवस्था की गई थी

विद्यार्थी आनंद के साथ बैठे एवं अपने गुरुजनों के साथ भ्रमण शुरू किया सभी विद्यार्थी बहुत उत्सुक थे कि उन्हें आज कुछ नई नई जानकारियां देखने को एवं सीखने को मिलेंगे और हर्षोल्लास के साथ उज्जैन शहर की ओर चल दिए वेधशाला के मुख्य द्वार पर पहुंच गए।

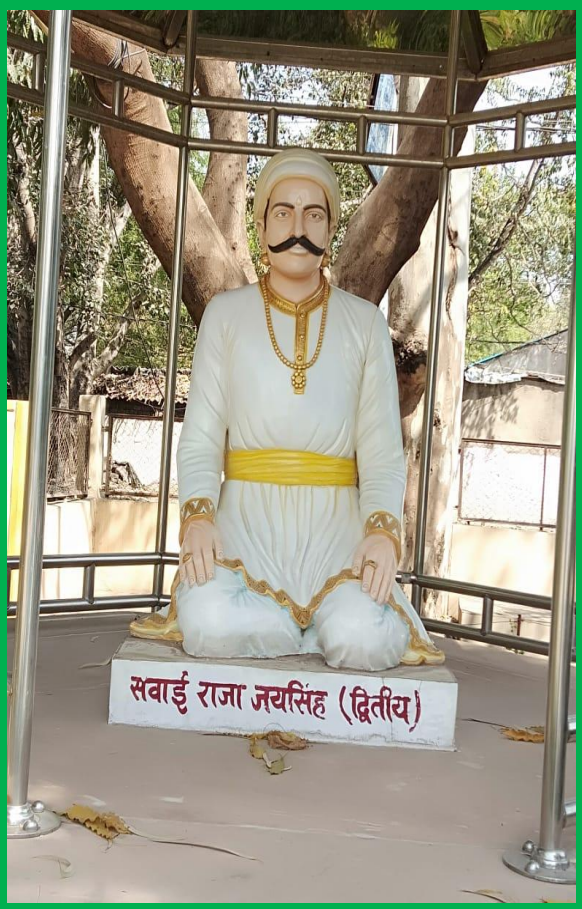

जीवाजी वेधशाला उज्जैन

आइए अब आपको अंतरिक्ष की एक रोमांचक यात्रा जीवाजी वेधशाला उज्जैन के द्वारा करवाते हैं जहां विद्यार्थियों को क्या-क्या चीजें देखने को मिली उसका वर्णन किया गया है.

असाधारण विद्वान जयपुर के महाराज सवाई राजा जयसिंह द्वितीय खगोल विज्ञान में विशेष रूचि

रखते थे | और उज्जैन की अति महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थिति से परिचित थे. इसलिए उन्होंने 1719 ईशवी में प्रथम वेधशाला का निर्माण उज्जैन में करवाया था

महाराज जय सिंह का उद्देश्य ही प्राचीन खगोल गणित को अधिक सटीक बनाना था विद्यार्थियों वास्तु कारों इतिहास और खगोल विधाओं के बीच जीवाजी वेधशाला उज्जैन हमेशा से ही जिज्ञासा का केंद्र रही है|

उज्जैन वेधशाला में सम्राट, नाड़ी वलय, दिगंश, और भित्ति यन्त्र एवं शंकु यन्त्र निर्मित हैं| देश की एकमात्र प्राचीन वेधशाला है जिसको प्राचीनता के साथ आधुनिकता का समन्वय करते हुए तारामंडल, टेलिस्कोप, डिजिटल शो आदि आधुनिक संसाधनों से सुसज्जित किया गया है| यहां स्थित नक्षत्र वाटिका में सूर्य तथा ग्रहों के मॉडल, राशि एवं नक्षत्र चक्र, स्टार ग्लोब, वर्ल्ड क्लॉक एवं एक्यूप्रेशर पथ बनाए गए हैं|

जीवाजी वेधशाला उज्जैन का संचालन स्कूल शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश के अंतर्गत महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान करता है| जिवाजी वेधशाला को विशेषतौर पर उज्जैन के मौसम और भौगोलिक स्थिति के अनुसार अधिकतम ज्ञान प्राप्ति हेतु संचालित किया गया है । उज्जैन शहर में दक्षिण की ओर क्षिप्रा नदी के दाहिनी तरफ जयसिंहपुर नामक स्थान में बना यह प्रेक्षा गृह "जंतर-मंतर के नाम से जाना जाता है । इसे जयपुर के महाराज जयसिंह ने सन १७३३ ई. में बनवाया था। उनदिनों वे मालवा के प्रशासक नियुक्त हुए थे । जैसा कि भारत के खगोलशात्री तथा भूगोलवेत्ता यह मानते आये हैं कि देशांतर रेखा उज्जैन से होकर गुजरती है । अतः यहाँ के प्रेक्षागृह का भी विशेष महत्व रहा है ।

यहाँ चार यंत्र लगवाए गए हैं

सम्राट यंत्र , नाड़ी वलय यंत्र , दिगंश यंत्र एवं भित्ति यंत्र

इन यंत्रों का सन 1924 ई. में महाराजा माधवराव सिंधिया ने मररम्मत करवाई थी उज्जैन ने खगोल विज्ञान के क्षेत्र में काफी महत्व का स्थान प्राप्त किया है, सूर्य सिद्धान्त और पंच

सिद्धान्त जैसे महान ग्रन्थ उज्जैन में लिखे गए हैं। भारतीय खगोलविदों के अनुसार, कर्क रेखा को उज्जैन से गुजरना चाहिए, यह हिंदू भूगोलवेत्ताओं के देशांतर का पहला मध्याह्न काल भी है। लगभग चौथी शताब्दी ई.पू. उज्जैन ने भारत के ग्रीनविच होने की प्रतिष्ठा का आनंद लिया। वेधशाला का निर्माण जयपुर के महाराजा सवाई राजा जयसिंह ने 1719 में किया था जब वे दिल्ली के राजा मुहम्मद शाह के शासनकाल में मालवा के राज्यपाल के रूप में उज्जैन में थे। एक बहादुर सेनानी और एक राजनीतिज्ञ होने के अलावा, राजा जयसिंह असाधारण रूप से एक विद्वान थे।

काल गणना की दृस्टि से पूरे विश्व में उज्जैन का खास महत्व:

उज्जैन शहर की जीवाजी वेधशाला में प्राचीन यंत्रों के माध्यम से ग्रहों की चाल सूर्य और चंद्र ग्रहण और सूर्य की चाल से समय की गणना की जाती है हर साल 23 सितंबर को दिन और रात बराबर होते हैं. 23 सितंबर को हर साल दिन और रात बराबर होते हैं दरअसल 23 सितंबर को सूर्य उत्तर से दक्षिण गोलार्ध में प्रवेश करता है इस दिन से दिन छोटे और रातें बड़ी होने लगती हैं विशेष दिन से ही नवग्रहों में प्रमुख ग्रह सूर्य विषुवत रेखा पर लंबवत रहता है इसे शरद संपात भी कहते हैं जीवाजी वेधशाला के अधीक्षक डॉ राजेंद्र प्रकाश गुप्त ने बताया कि सूर्य के दक्षिणी गोलार्ध में प्रवेश के कारण उत्तरी गोलार्ध में दिन छोटे और रातें बड़ी होने लगेगी ऐसा 22 दिसंबर तक चलेगा ।

1719 में हुआ था वेधशाला का निर्माण -

जयपुर के महाराज सवाई राजा जयसिंह द्वितीय ने देश के 5 शहरों में वेधशाला का निर्माणकराया अवंतिका में वेधशाला 1719 को बनाई गई थी जो कि यह सभी में प्रमुख है में राजा वेधशाला जयसिंह ने 8 साल तक ग्रह नक्षत्रों के वेद लेकर ज्योतिष गणित के प्रमुख

यंत्रों में संशोधन किया और पत्थर से निर्मित वेधशाला की इमारत है और यंत्र वर्तमान में भी जीवंत है ।

मध्यकालीन यन्त्र

सम्राट यन्त्र :

इस यंत्र को धूप घड़ी भी कहते हैं इसके माध्यम से हम प्रातः 6:00 बजे से शाम 6:00 बजे तक आज भी 20 सेकंड तक सूक्ष्मता से उज्जैन का स्थानीय समय ज्ञात कर सकते हैं । इस स्थानीय समय को प्रदान की गई द्वारा तालिकाओं भारतीय मानक समय में परिवर्तित किया जा सकता है ।

 # नाड़ी वलय यंत्र : इस यंत्र द्वारा हम सूर्य एवं ग्रह नक्षत्र एवं तारों की गोलार्ध में स्थिति को प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं । साथ ही यंत्र के दोनों गोल भागो पर एक एक घड़ी सेट कर दी गयी है, जिससे स्थानीय समय ज्ञात करते हैं.

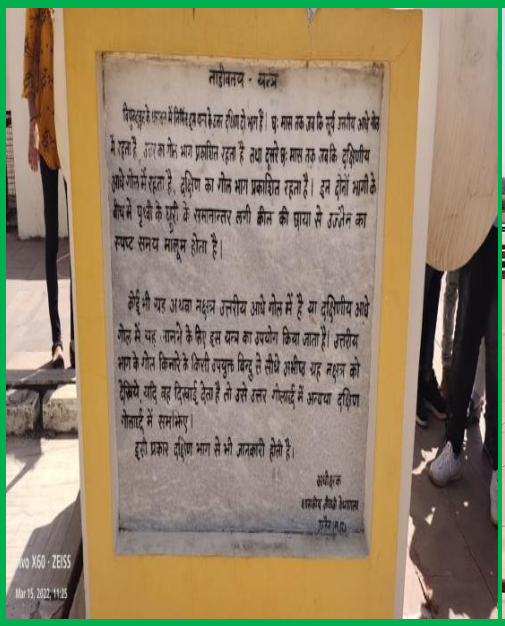

 # भित्ति यन्त्र : इस यंत्र के द्वारा हम ग्रह नक्षत्रों का नतांश प्राप्त कर सकते हैं । यह यंत्र उत्तर-दक्षिण वृत्त (उत्तर दक्षिण बिंदु) तथा दृष्टा के ख बिंदु को मिलाने वाली गोल रेखा के धरातल पर बना हुआ है ।

दिगंश यन्त्र :

इस यंत्र के बीच में बने गोल चबूतरे पर लगे लोहे के दंड में तुरीय यन्त्र लगाकर ग्रह- नक्षत्रों के उन्नतांश (क्षितिज से ऊंचाई) और दिगंश (पूर्व -पश्चिम दिशा के बिंदु से क्षिजित वृत्त में कोणात्मक दूरी)ज्ञात करते हैं |

शंकु यन्त्र:- शंकु यन्त्र में क्षितिज वृत्त के धरातल में निर्मित 360^0 के वृत्ताकार चबूतरे पर एक स्तम्भ में शंकु लगा हुआ है| इसी शंकु की परछाई से सूर्य की स्थिति को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है| शंकु की छाया से उन्नतांश भी ज्ञात किये जा सकते हैं|

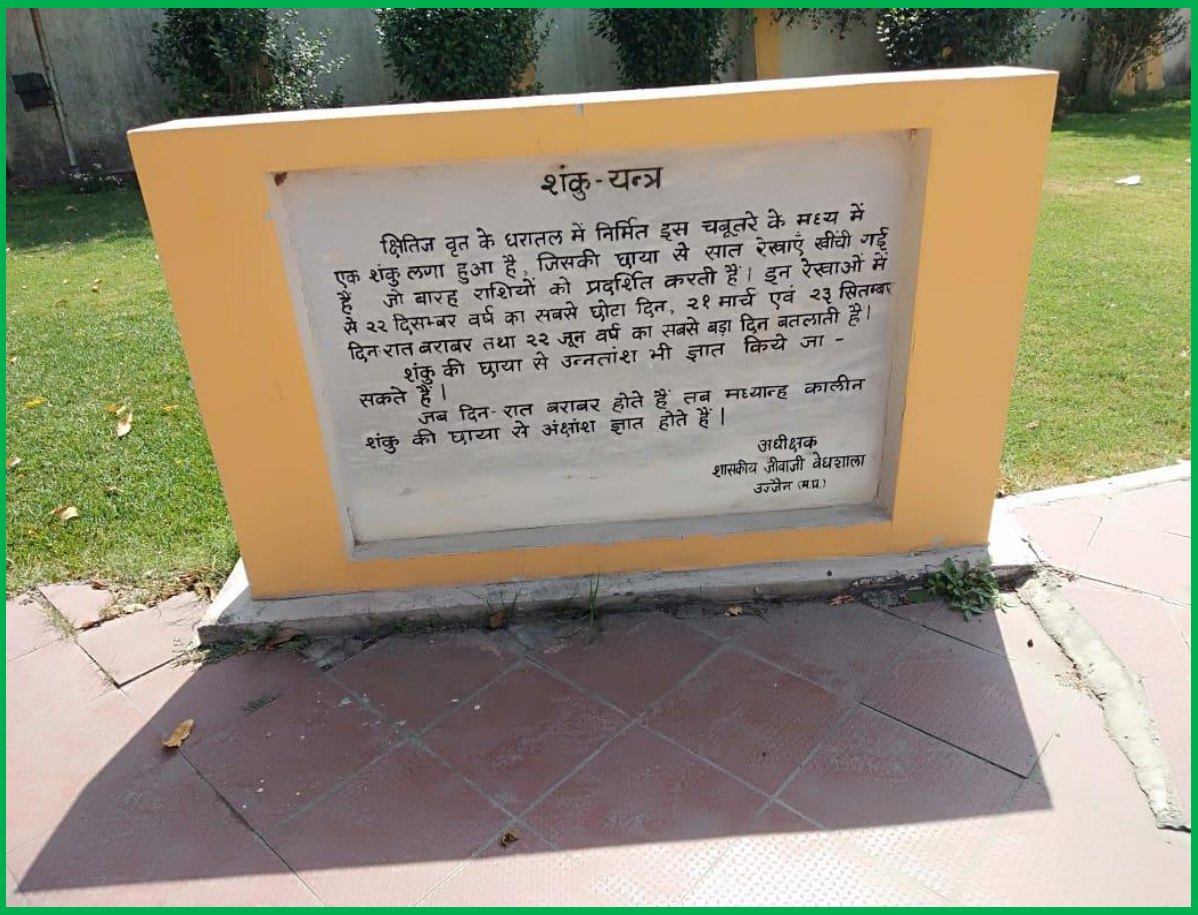
शंकु-यन्त्र
क्षितिज वृत के धरातल में निर्मित इस चबूतरे के मध्य में
एक शंकु लगा हुआ है, जिसकी छाया से सात रेखाएं खींची गई
हैं जो बारह राशियों को प्रदर्शित करती हैं। इन रेखाओं में
से २२ दिसम्बर वर्ष का सबसे छोटा दिन, २१ मार्च एवं २३ सितम्बर
दिन रात बराबर तथा २२ जून वर्ष का सबसे बड़ा दिन बतलाती है।
शंकु की छाया से उन्नतांश भी ज्ञात किये जा -
सकते हैं।
जब दिन-रात बराबर होते हैं तब मध्यान्ह कालीन
शंकु की छाया से अक्षांश ज्ञात होते हैं।
अधीक्षक
शासकीय जीवाजी वेधशाला
उज्जैन (म.प्र.)

तारामंडल :-

वेधशाला में आकाशीय स्थिति को समझने के लिए तारामंडल स्थापित किया गया है. इसमें डिजिटल प्रोजेक्टर के माध्यम से दिशा पहचान ध्रुव तारा, 12 राशियो, 27 नक्षत्रों, काल पुरुष, सप्त ऋषि आदि की समाज आधारित खगोलीय फिल्में हिंदी वह अंग्रेजी में दिखाई गयी .

टेलिस्कोप श्रृंखला:- रात्रि में आकाशीय अवलोकन एवं ग्रह स्थितियों की समझ हेतु 2,3,4, 8, इंच व्यास के टेलिस्कोप उपलब्ध है. इन टेलिस्कोप के माध्यम से रात्रि में चंद्रमा की सतह, उसके गड्ढे व पहाड़, शुक्र की कलाएं ,बृहस्पति की सतह, बैंड ग्रहण शनि के वलय, सूर्य की सतह, सूर्य के धब्बे, एवं पारगमन ग्रहण तथा अन्य ग्रह व तारों को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं .

नक्षत्र वाटिका:-

सूर्य एवं ग्रहों के तुलनात्मक आकार, उनके परिभ्रमण, राशियों एवं नक्षत्रों की स्थिति आदि की जानकारी हेतु नक्षत्र वाटिका के मध्य में सूर्य तथा आठ ग्रहों के मॉडल बनाए गए हैं. इनकी सूर्य से दूरी, आकार, मूल रंग तथा परिभ्रमण को दर्शाया गया है. प्रत्येक राशि व नक्षत्र के तारा समूह के आकार तथा उसकी वनस्पति को भी लगाया गया है. एक्यूप्रेशर पथ, स्टार ग्लोब और वर्ल्ड क्लॉक को भी यहां लगाया गया है.

मौसम विज्ञान

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, नागपुर ने जीवाजी वेधशाला अनेक मौसम उपकरणों से सुसज्जित किया है जिनमें वर्षा मापी यंत्र, एनीमोमीटर, विंड में , थर्मामीटर, बैरोमीटर, आर्द्रता मापी यंत्र आदि उपकरण सम्मिलित है. जीवाजी वेधशाला अपनी सटीक मौसम गणना के लिए प्रसिद्ध है.

दृश्य ग्रह स्थिति पंचांग

संस्था को इस पंचांग के प्रकाशन की आवश्यकता उस समय प्रतीत हुई जब द्वितीय महायुद्ध के कारण नॉटिकल आलमनोक तथा जॉब देश के ऐसे मैरिज जैसे दृश्य ग्रह स्थित बोधक वार्षिक प्रकाशन उपयोगकर्ताओं को यथा समय उपलब्ध नहीं हो पा रहे थे. तब सन 1942 से ही संस्था द्वारा सायन पद्धति आधारित पंचम का प्रकाशन किया जा रहा है.

लंच टाइम:-

और इस प्रकार हम सब वेधशाला एवं तारामंडल का भ्रमण करने के पश्चात दोपहर के भोजन के लिए निकल पड़े |

और इस तरह सभी विद्यार्थी एवं मार्गदर्शक एवं परिचालक उज्जैन के श्रीनाथ रेस्टोरेंट में पहुंचे जो कि बैंक ऑफ इंडिया के पास सेठी नगर उज्जैन में स्थित है वहां पर ₹120 प्रति

व्यक्ति की दर से विद्यार्थियों को भोजन उपलब्ध कराया गया जो की बहुत ही स्वादिष्ट था और उस भोजन की थाली में कई प्रकार के व्यंजन थे कुछ नमकीन थे तो कुछ मीठी थी| जिसमे दाल ,रोटी ,और विभिन्न प्रकार की तरकारियाँ एवं चावल खाने का आनंद हम सभी ने लिया, और हम सभी लोगों को भोजन करने में काफी आनंद आया | और इस तरह सभी लोगों के खाने की व्यवस्था में कुल ₹4800 खर्च हो गए और भोजन के पश्चात् हम सभी महाकाल कॉरिडोर भ्रमण के लिए रवाना हुए|

महाकाल कॉरिडोर भ्रमण :-

शिव पुराणों के अनुसार उज्जैन में बाबा महाकाल का मंदिर अति प्राचीन है | मंदिर की स्थापना द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण के पालनहार नंदजी की 8 पीढ़ी पूर्व में हुई थी 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक इस मंदिर में बाबा महाकाल दक्षिणमुखी होकर विराजमान है मंदिर के शिखर के ठीक ऊपर से कर्क रेखा गुजरती है इसलिए इसे पृथ्वी का नाभि स्थल भी माना जाता है इससे पूर्व छठी शताब्दी में धर्म ग्रंथों में उज्जैन के महाकाल मंदिर का उल्लेख मिलता आ रहा है उज्जैन के राजा प्रद्योत के काल से लेकर पूर्व दूसरी शताब्दी तक महाकाल मंदिर में अवशेष प्राप्त होते हैं महाकालेश्वर मंदिर के प्राप्त संदर्भों के अनुसार इसवी पूर्व छठी सदी में उज्जैन के राजा चंद्र प्रयोग में महाकाल परिसर की व्यवस्था के लिए अपने पुत्र कुमारसंभव को नियुक्त किया था 10 वीं सदी के अंतिम दशकों में संपूर्ण मालवा पर परमार राजाओं का आधिपत्य हो गया इस काल में रचित काव्य ग्रंथों में महाकाल मंदिर का सुंदर वर्णन मिलता है 11 वीं सदी के आठवें दशक में गजनी सेनापति

द्वारा किए गए आधार के बाद के उत्तरार्ध 12 वीं सदी के पूर्वार्ध में नरवर्मा के शासनकाल में मंदिर का पुनर्निर्माण हुआ |

1234-35 में सुल्तान इल्तुतमिश ने पुनः आक्रमण कर महाकालेश्वर मंदिर को ध्वस्त कर दिया किंतु मंदिर का धार्मिक महत्व बना रहा| 14 वी एवं 15वीं सदी के ग्रंथों में महाकाल का उल्लेख मिलता है| 18 वीं सदी के चौथे दशक में मराठा राजाओं का मालवा पर आधिपत्य हो गया पेशवा बाजीराव प्रथम ने उज्जैन का प्रशासन अपने विश्व स्त सरदार राणौ जी शिंदे को सौंपा. राणा जी के दीवान थे रामचंद्र सुखटंकर बाबा शैणवी| इन्होंने ही 18वीं सदी के चौथे एवं पांचवें दशक में मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया वर्तमान में जो महाकाल मंदिर स्थित है उसका निर्माण राणा जी शिंदे ने ही करवाया वर्तमान में महाकाल ज्योतिर्लिंग मंदिर के सबसे नीचे के भाग में प्रतिष्ठित है।

उज्जैन महाकाल मंदिर कॉरिडोर के प्रथम चरण यानी श्री महाकाल लोक का लोकार्पण प्रधानमंत्री ने 11 अक्टूबर 2022 को किया । महाकाल लोक की खूबसूरत तस्वीरें मध्य प्रदेश शाशन ने जारी की हैं , जो देश भर के लोगो का मन मोह रही हैं । मध्य प्रदेश के उज्जैन में स्थित महाकाल परिसर का विस्तार 20 हेक्टेयर में किया गया है । 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक महाकाल ज्योतिर्लिंग को सबसे प्रमुख माना जाता है। राजा विक्रमादित्य की नगरी उज्जैन में यह शिवलिंग उनके काल से पूर्व से ही विराजमान है। आओ जानते हैं मंदिर का प्राचीन और पौराणिक इहिहास।विश्व की एक मात्र उत्तर प्रवाह मान क्षिप्रा नदी के पास बसी सप्तपुरियों में से एक भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षा स्थली अवंतिका अर्थात उज्जैन को राजा महाकाल और विक्रमादित्य की नगरी कहा जाता है। यहां तीन गणेशजी विराजमान हैं चिंतामन, मंछामन और इच्छामन। यहां पर ज्योतिर्लिंग के साथ दो शक्तिपीठ हरसिद्धि और गढ़कालिका है और 84 महादेव के साथ ही यहां पर देश का एक मात्र अष्ट चिरंजीवियों का मंदिर है। यह मंगलदेव की उत्पत्ति का स्थान भी है और यहां पर नौ नारायण और सात सागर है। यहां के शमशान को तीर्थ माना जाता है जिसे चक्रतीर्थ कहते हैं। यहां पर माता

पार्वती द्वारा लगाया गया सिद्धवट है। श्रीराम और हनुमान ने उज्जैन की यात्रा की थी। यहां के कुंभ पर्व को सिंहस्थ कहते हैं। राजा विक्रमादित्य ने ही यहीं से विक्रमादित्य के कैलेंडर का प्रारंभ किया था और उन्होंने ही इस देश को सर्वप्रथम बार सोने की चिढ़िया कहकर यहां से सोने के सिक्के का प्रचलन किया था।

शैक्षणिक भ्रमण हेतु पहुंचे अधिकांश विद्यार्थी नागदा के गावों से थे और अब तक शाम के लगभग ४ बज चुके थे और इसीलिए अब हम सभी ने अपना अकादमिक टूर समाप्त कर नागदा वापस लौटनेकानिर्णयलिया

.

Summary

- **Date:** 12 December 2022
- **Director/ Principal:** Prof. (Dr.) P.B. Reddy(Govt. College, Nagda)
- **Guide:**

  1- Dr. K.C. Mishra, Govt. College, Nagda

  2- Dr. Usha Verma, Govt. College, Nagda

  3- Dr. Sonakshi Solanki, Govt. College, Nagda

  4- Shri Girivar Prashad Sharma, Jantar-Mantar, Teacher, H.S. Topkhana School, Ujjain

- **Students squad Number:** 40
- **Vehicles:** Nagarpalika Nagda bus
- **Number of Vehicles:** one
- **Tickets for Jantar-Mantar/vedhshala:** INR585
- **Lunch Plate per head** 120/-

  Total=40X120=4800

  Grand Total=5,385/-

Supporting Documents:-

प्रति,

प्राचार्य
शा० महाविद्यालय नागदा
जिला - उज्जैन

विषय: UG एवं P.G. साइन्स स्ट्रीम के विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक भ्रमण की स्वीकृति के सम्बन्ध में

महोदय,

उपरोक्त विषयान्तर्गत लेख है कि MPHEQIP के अन्तर्गत महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक भ्रमण हेतु एक्शन-प्लान, उच्च-शिक्षा विभाग, भोपाल को भेजा गया है, इस सन्दर्भ में आपसे निवेदन है कि 12 December, 2022 को उक्त विद्यार्थियों शैक्षणिक भ्रमण हेतु तारामण्डल एवं वेधशाला उज्जैन ले जाने हेतु स्वीकृति प्रदान करने का कष्ट करें

(धन्यवाद)

डॉ. के. सी. मिश्रा
सहायक प्राध्यापक
(भौतिकी)

10/12/22

प्रति,

नगरपालिका अध्यक्ष
नागदा (उज्जैन)

विषयः 12 दिसम्बर 2022 को शैक्षणिक भ्रमण हेतु वाहन उपलब्ध करवाने के सम्बन्ध में

महोदय,

उपरोक्त विषयान्तर्गत लेख है कि 12 दिसम्बर को हमारे महाविद्यालय के B.Sc. 3rd year (Maths Gp.) एवं B.A. 3rd year के विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण हेतु तारामण्डल एवं वेधशाला, उज्जैन भ्रमण निर्धारित हुआ है।

अतः आपसे निवेदन है कि उक्त तिथि को प्रातः 8:30 बजे वाहन-चालक सहित वाहन ~~महाविद्यालय~~ नगरपालिका के सामने को उपलब्ध करने का कष्ट करें

धन्यवाद

प्राचार्य
शा० महाविद्यालय
नागदा

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन (म.प्र.)

(साधिकार मु.का.अ. उज्जैन विकास प्राधिकरण)

राशि प्राप्ति रसीद

बुक क्र. 6

रसीद क्र. No 59

दिनांक 12.12.22

संस्था का नाम शा० महाविद्यालय नागदा

डा० के० सी० मिश्रा मो.नं. 7533989432

क्र.	विवरण		दर प्रति	संख्या	राशि
1	प्रवेश शुल्क	व्यस्क	रु. 10/-		
		विद्यार्थी	रु. 5/-	39	195
2	तारामण्डल शुल्क	व्यस्क	रु. 20/-		
		विद्यार्थी	रु. 10/-	39	390
3	3डी शो शुल्क	व्यस्क	रु. 20/-		
		विद्यार्थी	रु. 10/-		
4	एफेमेरिज		रु. /-		
5	फोल्डर (हिन्दी)		रु. /-		
6	फोल्डर (अंग्रेजी)		रु. /-		
			योग –	39	585

शब्दों में रुपये पांच सौ पिन्चानवे रु. नकद प्राप्त किये।

हस्ताक्षर संबंधित

हस्ताक्षर प्राप्तकर्ता

॥ श्री नाथ जी ॥

श्रीनाथ रेस्टोरेन्ट

264, बैंक ऑफ इण्डिया के पास, सेठी नगर, उज्जैन

॥ कैला देवी ॥

॥ जय महाकाल ॥

* बर्थ-डे पार्टी, * किटी पार्टी * शादी
* रुम सुविधा उपलब्ध

मो : 9302177717, 9302077717
6265166996, फोन :

बि. क्रं. 503

दिनांक 12/12/22

श्रीमान/श्रीमती शासकीय कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय नागदा, जिला-उज्जैन

40 लोग खाना व्यवस्था पर = 120 = 4800/

एडवांस	
पिछला बकाया	
योग	4800/

नोट -
* सभी प्रसंगों का न्याय क्षेत्र उज्जैन होगा।
* भूल-चूक लेनी-देनी।

वास्ते : श्रीनाथ रेस्टोरेन्ट

5:43

Academic Tour Feedback(12...

Academic Tour Feedback(12/12/2022), Academic Session 2022-23

Your response has been recorded

Edit your response

Submit another response

This content is neither created nor endorsed by Google. Report Abuse - Terms of Service - Privacy Policy

Google Forms

उज्जैन शैक्षणिक भ्रमण के लिए विद्यार्थियों का दल हुआ रवाना

दैनिक अवन्तिका ● नागदा

सोमवार सुबह शासकीय महाविद्यालय नागदा के छात्र-छात्राओं का समुह शैक्षणिक भ्रमण के लिए बस द्वारा उज्जैन रवाना हुए।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रेड्डी ने प्रेस विज्ञप्ति के द्वारा बताया कि अकादमिक भ्रमण का मुख्य उद्देश्य ज्ञान अर्जन करना होता साथ ही यह सीखने का अच्छा माध्यम होता है। इसी उद्देश्य से मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देश के परिपालन में एवं विश्व बैंक के सहयोग से आज 12 दिसंबर सोमवार को शासकीय महाविद्यालय, नागदा के कला व विज्ञान के अंतिम वर्ष के 40 विद्यार्थियों को उज्जैन के तारा मंडल, जंतर मंतर एवं महाकाल लोक के भ्रमण के लिए रवाना किया गया। यात्रा का प्रारम्भ नगर पालिका नागदा प्रांगण से हुआ। यात्रा पर जाने हेतु सुबह ही छात्र-छात्राएं एकत्रित हो गये थे। यात्रा के पूर्व प्राचार्य द्वारा सभी विद्यार्थियों को यात्रा के दौरान ध्यान रखने वाले बिंदु एवं आवश्यक निर्देश दिये गये। तत्पश्चात डॉ. रेड्डी ने हरी झंडी दिखाकर बस को रवाना किया।

शैक्षणिक भ्रमण में विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए डॉ. मिश्रा एवं कला संकाय के लिए डॉ. उषा वर्मा एवं सोनाक्षी सोलंकी मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु प्रभारी के रूप में साथ में रहेंगे। प्राचार्य डॉ. रेड्डी एवं समस्त स्टाफ ने भ्रमण पर गये दल को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की गई।

Acknowledgement:

Special thanks to Janbhagidari adhaykshamahoday, Sri Rajesh Dhakad for making efforts for granting nagar palika nagda Bus, as bus was restricted only for 18km circle of Nagda under RTO, so without his efforts Nagar Palika parishad nagda was bound under laws and rule.

Thank You